International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत की आर्थिक वृद्धि में महिलाओं की भूमिका

डॉ. राजेश्वर प्रसाद

अर्थशास्त्र विभाग, एस. एन. कॉलेज, शाहमल खैरा देव (रोहतास), बिहार, भारत

सारांश (Abstract)

यह शोधपत्र भारत में वर्ष 2013 से 2023 तक के दशक में महिलाओं की आर्थिक स्थिति, श्रम बल भागीदारी दर (Female Labour Force Participation Rate – FLFPR), तथा राज्यवार कार्य भागीदारी दर (Work Participation Rate – WPR) का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSSO), आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) तथा अन्य सरकारी स्रोतों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। परिणाम बताते हैं कि 2013 से 2018 के बीच महिलाओं की श्रम भागीदारी में गिरावट आई, किंतु 2018 के बाद इसमें उल्लेखनीय सुधार हुआ और वर्ष 2023 तक यह दर लगभग 37 प्रतिशत तक पहुँच गई। इस वृद्धि में महिला सशक्तिकरण से जुड़ी सरकारी योजनाओं, कौशल विकास कार्यक्रमों, वित्तीय समावेशन तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था की अहम भूमिका रही। यद्यपि प्रगति स्पष्ट है, फिर भी लैंगिक वेतन अंतर, असंगठित रोजगार, और सामाजिक पूर्वाग्रह जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। निष्कर्षतः, *विकसित भारत 2047* के लक्ष्य को साकार करने के लिए महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को और सुदृढ़ करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द: महिला श्रम बल भागीदारी, आर्थिक वृद्धि, लैंगिक समानता, राज्यवार विश्लेषण, PLFS, महिला सशक्तिकरण

1. परिचय

भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ग्रामीण भारत में महिलाएँ कृषि, पशुपालन, सूक्ष्म उद्योग, और घरेलू कार्यों में प्रमुख योगदान देती हैं। परंतु, औपचारिक और संगठित क्षेत्र में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही है। वर्ष 2013 से 2023 का दशक महिलाओं की श्रम भागीदारी के दृष्टिकोण से परिवर्तनकारी साबित हुआ है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSSO) और आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के आंकड़ों के अनुसार, महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) 2013–14 में लगभग 31.2% थी, जो 2017–18 में घटकर 23.3% रह गई [1][2]। परंतु, 2018 के बाद इसमें निरंतर वृद्धि दर्ज की गई और वर्ष 2022–23 तक यह 37% पहुँच गई [3]। इसी अवधि में महिला वर्कर पॉपुलेशन रेशियो (WPR) भी 22% से बढ़कर 35.8% हुआ, जबकि महिला बेरोजगारी दर घटकर 3.5% रह गई [3]।

यह सुधार विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY), दीनदयाल अंत्योदय योजना–एनआरएलएम, स्टैंड-अप इंडिया, और डिजिटल इंडिया से संभव हुआ, जिनसे महिलाओं में उद्यमिता, वित्तीय

साक्षरता, और डिजिटल कार्यक्षमता बढ़ी [4][5]। साथ ही, शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी है; उच्च शिक्षा में नामांकन 2013 के बाद से लगभग दोगुना हो गया है और अब महिलाएँ कुल विद्यार्थियों का 49% हिस्सा हैं [6]।

फिर भी, पुरुष श्रम बल भागीदारी दर लगभग **77%** है, जिससे स्पष्ट है कि लैंगिक असमानता अब भी बनी हुई है [7]। सामाजिक मान्यताएँ, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, और कार्यस्थल सुविधाओं की कमी महिलाओं की आर्थिक प्रगति में बाधक हैं [8]। अतः यह अध्ययन पिछले दशक (2013–2023) के दौरान महिला श्रम भागीदारी के प्रवृत्तियों, राज्यवार अंतर, और नीतिगत प्रभावों का विश्लेषण करता है।

2. साहित्य समीक्षा

लैंगिक समानता और आर्थिक विकास के मध्य संबंध पर अनेक अध्ययनों ने प्रकाश डाला है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) तथा विश्व बैंक के अनुसार, महिला श्रम भागीदारी में वृद्धि से उत्पादन, आय, और सामाजिक कल्याण में सुधार होता है [9]।

दास और देसाई (2003) के अध्ययन में यह पाया गया कि भारत में शिक्षित महिलाओं के बावजूद श्रम भागीदारी कम रही, जिसका कारण सामाजिक मान्यताएँ और घरेलू जिम्मेदारियाँ हैं [10]। मैकिंज़ी ग्लोबल इंस्टीट्यूट (2015) के अनुसार, यदि भारत लैंगिक समानता के क्षेत्र में प्रगति करे, तो वह अपने सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 770 अरब अमेरिकी डॉलर तक की वृद्धि कर सकता है [11]।

2013–2018 के दौरान महिला भागीदारी में गिरावट का कारण कृषि से सेवा क्षेत्र में संक्रमण और सीमित रोजगार अवसर थे [12]। क्लासेन और पीटर्स (2015) ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं में भी रोजगार से दूरी बढ़ी, क्योंकि उपलब्ध नौकरियाँ उनके कौशल से मेल नहीं खाती थीं [13]।

2018 के बाद से स्थिति में सुधार देखा गया। PLFS 2022–23 और आर्थिक सर्वेक्षण (2022–23) के अनुसार, महिला श्रम भागीदारी दर बढ़कर 37% तक पहुँच गई [3][14]। ग्रामीण क्षेत्रों में यह वृद्धि अधिक रही, जहाँ महिलाएँ स्वरोजगार, कृषि, और मनरेगा जैसे कार्यक्रमों से जुड़ीं।

महिला सशक्तिकरण में योगदान देने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं –

1. शिक्षा एवं कौशल विकास**:** *स्किल इंडिया मिशन* के अंतर्गत वर्ष 2023 तक 1 करोड़ से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया [15]।
2. वित्तीय समावेशन**:** *प्रधानमंत्री जनधन योजना* (PMJDY) के तहत 26 करोड़ से अधिक महिलाओं के खाते खोले गए, और *मुद्रा योजना* की 68% ऋण राशि महिलाओं को दी गई [16]।
3. डिजिटल सशक्तिकरण: मोबाइल इंटरनेट व प्लेटफ़ॉर्म कार्य (Gig Economy) के कारण महिलाओं को लचीले कार्य अवसर प्राप्त हुए [17]।
4. नीतिगत सुधार: मातृत्व लाभ अधिनियम, *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ* अभियान, तथा लैंगिक बजट जैसी पहलें महिलाओं की स्थिति सुधारने में सहायक रहीं [18]।

फिर भी, चुनौतियाँ बरकरार हैं। लैंगिक वेतन अंतर लगभग **28%** है, और अधिकांश महिलाएँ असंगठित व बिना सुरक्षा वाले कार्यों में संलग्न हैं [19]। टाइम यूज़ सर्वे (2019–20) के अनुसार, महिलाएँ प्रतिदिन औसतन 5 घंटे घरेलू कार्यों में लगाती हैं, जबकि पुरुष केवल 45 मिनट [20]।

यह स्पष्ट है कि 2013–2023 का दशक महिलाओं की आर्थिक भूमिका में पुनरुत्थान का रहा है। इस अवधि में नीति और समाज दोनों स्तरों पर सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं।

3. कार्यविधि

पद्धति:

वर्ष 2013–2023 की अवधि के आँकड़ों का प्रवृत्ति (Trend) विश्लेषण किया गया है। साथ ही, कुछ प्रमुख राज्यों के लिए 15–29 वर्ष आयु वर्ग की महिला कार्य भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

(क) राष्ट्रीय स्तर पर प्रवृत्ति (2013–2023)

Table 1:- राष्ट्रीय स्तर पर प्रवृत्ति [1],[3]

वर्ष	महिला श्रम बल भागीदारी दर (%)	महिला कार्य जनसंख्या अनुपात (%)	बेरोजगारी दर (%)
2013–14	31.2	29.6	4.7
2015–16	26.7	24.8	5.1
2017–18	23.3	22.0	5.6
2019–20	30.0	28.7	4.2
2021–22	35.0	33.7	3.7
2022–23	37.0	35.8	3.5

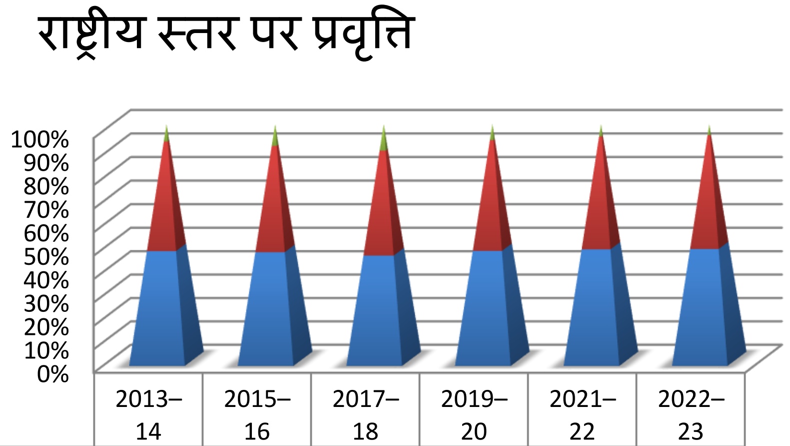

	2013–14	2015–16	2017–18	2019–20	2021–22	2022–23
बेरोजगारी दर (%)	4.7	5.1	5.6	4.2	3.7	3.5
महिला कार्य जनसंख्या अनुपात (%)	29.6	24.8	22	28.7	33.7	35.8
महिला श्रम बल भागीदारी दर (%)	31.2	26.7	23.3	30	35	37

डेटा से स्पष्ट है कि 2013–2018 के बीच महिला भागीदारी में गिरावट रही, परंतु 2018 के बाद इसमें निरंतर सुधार हुआ। यह सुधार ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रहा, जहाँ महिलाएँ कृषि और स्वरोजगार में सक्रिय हुईं।

(ख) राज्यवार तुलना (15–29 वर्ष आयु वर्ग)

कुछ प्रमुख राज्यों के लिए 15–29 वर्ष आयु वर्ग की महिला कार्य भागीदारी का तुलनात्मक अध्ययन:-

Table 2:- 15–29 वर्ष आयु वर्ग की महिला कार्य भागीदारी [21]

राज्य	**महिला कार्य भागीदारी दर (%)**	**वर्ष**
हिमाचल प्रदेश	50.9	2019–20
तमिलनाडु	34.7	2019–20
गुजरात	24.0	2019–20
बिहार	4.0	2019–20
राजस्थान	16.7	2019–20

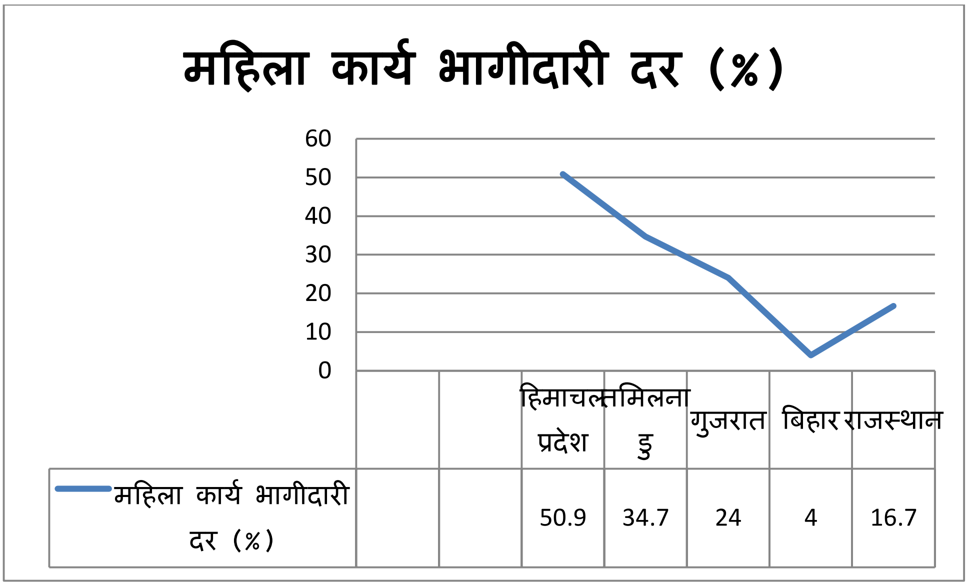

हिमाचल प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में महिला भागीदारी अधिक है, जबकि बिहार और राजस्थान जैसे राज्यों में यह बहुत कम है। सामाजिक संरचना, शिक्षा स्तर, और स्थानीय रोजगार अवसर इन भिन्नताओं को प्रभावित करते हैं।

4. परिणाम

(क) राष्ट्रीय स्तर पर प्रवृत्ति (2013–2023)

- 2013–2018 के बीच महिला भागीदारी में गिरावट रही, परंतु 2018 के बाद इसमें निरंतर सुधार हुआ। यह सुधार ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रहा, जहाँ महिलाएँ कृषि और स्वरोजगार में सक्रिय हुईं।

(ख) राज्यवार तुलना (15–29 वर्ष आयु वर्ग)

- हिमाचल प्रदेश और तमिलनाडु जैसे राज्यों में महिला भागीदारी अधिक है, जबकि बिहार और राजस्थान जैसे राज्यों में यह बहुत कम है। सामाजिक संरचना, शिक्षा स्तर, और स्थानीय रोजगार अवसर इन भिन्नताओं को प्रभावित करते हैं।

(ग) क्षेत्रीय संरचना

2017–18 में महिला स्वरोजगार दर **51.9%** थी, जो 2022–23 में बढ़कर **65.9%** हो गई [3]। हालाँकि यह आत्मनिर्भरता का संकेत है, परंतु अधिकांश स्वरोजगार असंगठित क्षेत्र में हैं, जहाँ सामाजिक सुरक्षा सीमित है।

5. सुझाव

I. **औपचारिक रोजगार को बढ़ावा दें:** ऐसी उद्योग नीतियाँ बनें जो महिलाओं के लिए अनुकूल कार्य वातावरण और समान वेतन सुनिश्चित करें।
II. **कौशल विकास और प्रशिक्षण:** *स्किल इंडिया* व *प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)* को महिलाओं की स्थानीय जरूरतों के अनुरूप बनाया जाए।
III. **सामाजिक अवसंरचना का विस्तार:** किफायती बाल देखभाल केंद्र, सुरक्षित परिवहन, और लचीले कार्य घंटे महिलाओं की भागीदारी बढ़ा सकते हैं।
IV. **महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन:** *मुद्रा* और *स्टैंड-अप इंडिया* योजनाओं के अंतर्गत ऋण उपलब्धता सरल बनाई जाए।
V. **लैंगिक समानता के लिए कानूनी सुधार:** समान वेतन, भेदभाव-रोधी प्रावधान, और मातृत्व लाभों को सुदृढ़ किया जाए।

6. निष्कर्ष

वर्ष 2013 से 2023 का दशक भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका के पुनरुत्थान का साक्षी रहा है। जहाँ 2013–18 में गिरावट दर्ज की गई, वहीं 2018 के बाद महिला श्रम भागीदारी में तीव्र सुधार हुआ और यह 37% तक पहुँच गई। यह सुधार शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल कार्य अवसर, और सरकारी नीतियों के कारण संभव हुआ।

हालाँकि, औपचारिक क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी अब भी कम है और लैंगिक असमानता बरकरार है। भविष्य में *विकसित भारत 2047* के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को और मज़बूत बनाना आवश्यक है, ताकि वे न केवल श्रम बाजार में बल्कि नीति-निर्माण में भी समान रूप से प्रतिनिधित्व करें।

References

1. [1] राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO), *रोजगार–बेरोजगारी रिपोर्ट (68वां चक्र, 2011–12)*, भारत सरकार, 2014।
2. विश्व बैंक, *भारत में महिला श्रम भागीदारी प्रवृत्तियाँ*, 2016।
3. सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI), *आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) 2017–18 से 2022–23*, भारत सरकार, 2023।
4. वित्त मंत्रालय, *जेंडर बजट स्टेटमेंट 2022–23*, भारत सरकार, 2023।
5. ग्रामीण विकास मंत्रालय, *दीनदयाल अंत्योदय योजना – एनआरएलएम वार्षिक रिपोर्ट 2023*, भारत सरकार।
6. शिक्षा मंत्रालय, *AISHE 2021–22*, भारत सरकार, 2023।
7. विश्व बैंक, *जेंडर डेटा पोर्टल: भारत*, 2023।
8. UNDP, *ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट: जेंडर असमानता सूचकांक*, 2023।
9. ILO, *ग्लोबल एम्प्लॉयमेंट ट्रेंड्स फॉर वीमेन 2023*, जिनेवा, 2023।
10. दास, एम. और देसाई, एस., "भारत में शिक्षित महिलाओं का रोजगार में निम्न भागीदारी का कारण," *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 2003।
11. McKinsey Global Institute, *The Power of Parity: Advancing Women's Equality in India*, 2015।

12. NSSO, *रोजगार–बेरोजगारी स्थिति 2013–14*, रिपोर्ट संख्या 554, 2015।
13. Klasen, S. & Pieters, J., "Female Labour Force Participation in Urban India," *World Development*, 2015।
14. भारत सरकार, *आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23*, वित्त मंत्रालय, 2023।
15. NSDC, *स्किल इंडिया वार्षिक रिपोर्ट 2022–23*, नई दिल्ली, 2023।
16. वित्त मंत्रालय, *प्रधानमंत्री मुद्रा योजना प्रगति रिपोर्ट 2023*, भारत सरकार।
17. नीति आयोग, *India's Booming Gig and Platform Economy*, 2022।
18. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, *वार्षिक रिपोर्ट 2022–23*, भारत सरकार।
19. NSO, *PLFS 2021–22*, भारत सरकार, 2022।
20. MoSPI, *टाइम यूज़ सर्वे 2019–20*, भारत सरकार, 2021।
21. रोजगार महानिदेशालय (DGE), *रोजगार संकेतक रिपोर्ट 2023*, भारत सरकार।